मोची का गीत

पूरी रात अमीर आदमी अपने पैसे की चिंता करता है,
और पूरे दिन वह मोची के गाने के कारण जागा रहता है.
मोची उसके तहखाने में रहता है.

एक चतुर, चाल से अमीर आदमी मोची का गाना बंद करवा देता है - पर बाद में मोची अपनी पत्नी की सहायता से कुछ हिम्मत जुटाता है.

इस कहानी में मार्सिया सीवेल ने पेरिस के एक बड़े घर की दो अलग-अलग दुनियाओं को बड़े बेहतरीन तरीके से रचा हैं.

मोची का गीत

मार्सिआ

एक ज़माने में पेरिस के एक बड़े घर के तहखाने में एक गरीब मोची रहता था. पत्नी और बच्चों के रख-रखाव के लिए पर्याप्त पैसा कमाने के लिए वो सुबह से लेकर देर रात तक काम करता था. लेकिन वह अपने अंधेरे छोटे कमरे में खुश था. वो पूरे दिन पुराने जूते मरम्मत करते हुए गाने गाता था.

उसके घर की ऊपर वाली मंजिल पर एक बहुत अमीर आदमी रहता था. उसके कमरे बड़े और शानदार थे. वो रेश्मीन महंगे कपड़े पहनता था और उसके पास बहुत सारी कीमती चीजें थीं. फिर भी, वो आदमी कभी खुश नहीं था.

रात भर वह अपने पैसों के बारे में सोचकर जागता रहता था. वो कैसे और अधिक धन कमाए? कहीं उसका धन चोरी न हो जाए? इससे पहले कि रात को उसकी आँख लगती अक्सर सूरज खिड़कियों से चमकने लगता था.

जैसे ही सुबह की पहली किरण दिखाई देती, मोची उठकर अपना काम शुरू कर देता था. वो चमड़े पर हथौड़ा मारते समय भी गीत गाता था. उसके गाने की आवाज़, अमीर आदमी के कमरे तक जाती थी और उसे जगाती थी.

"यह बड़ी भयानक स्थिति है!" अमीर आदमी ने कहा. "मैं अपने धन के बारे में सोचने के कारण रात में सो नहीं पाता, और मैं उस मूर्ख मोची के गाने के कारण दिन में भी नहीं सो सकता."
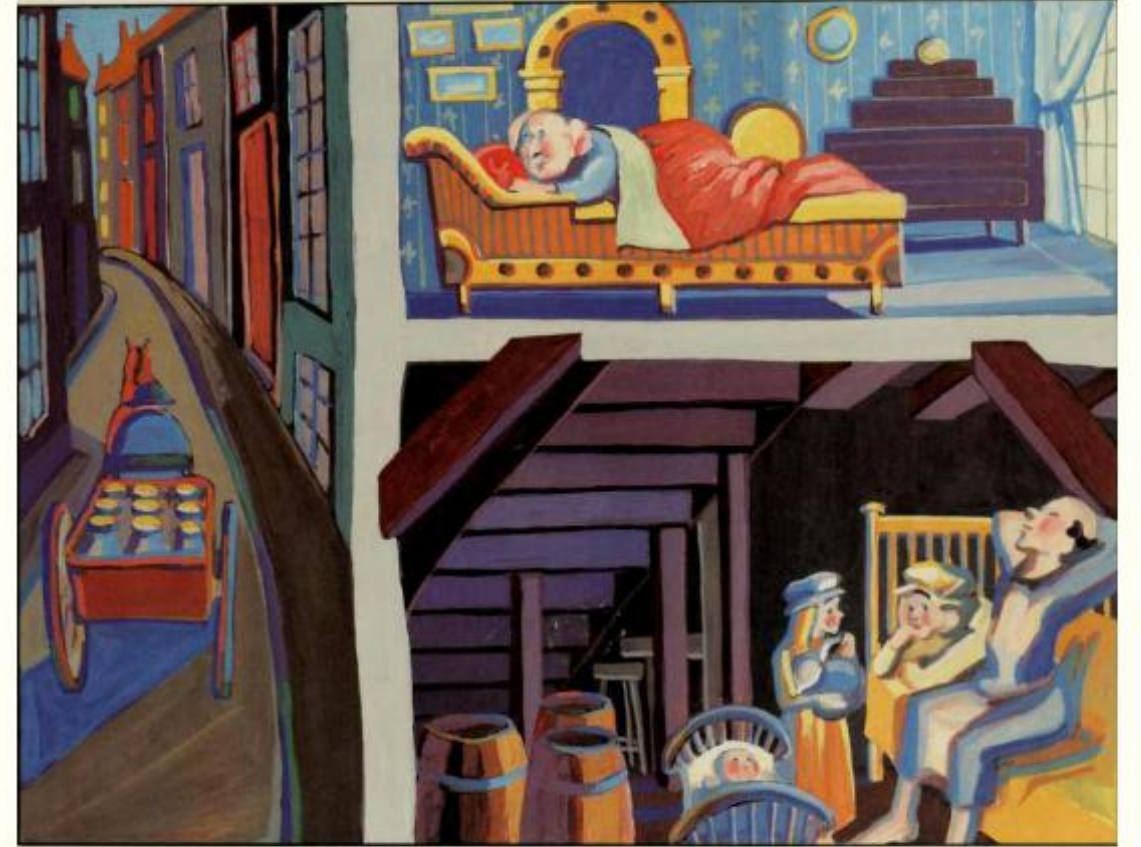
फिर अमीर आदमी इस मामले पर गंभीरता से सोचने लगा.

"हम्म," उसने खुद से कहा, "अगर मोची को कुछ चिंता लग जाए तो फिर वो इतना नहीं गाएगा. मुझे उसका गाना रोकने के लिए किसी योजना के बारे में सोचना चाहिए. बताओ, लोगों को सबसे ज्यादा चिंता किस चीज़ की होती है?“

"पैसा, धन, दौलत! क्यों, बिल्कुल ठीक! कुछ लोग चिंता करते हैं क्योंकि वो गरीब होते हैं. यह सच है कि मोची के पास बहुत कम धन है, लेकिन वो फिर भी चिंता नहीं करता है. असल में, मैं जितने लोगों को जानता हूँ वो उनमें से सबसे खुशहाल आदमी है.“

"कुछ लोग इसलिए चिंता करते हैं क्योंकि उनके पास बहुत अधिक पैसा होता है. मेरी वही परेशानी है. अगर मोची के पास बहुत ज्यादा पैसा होगा, तो क्या वो भी चिंता करेगा?

वाह! यह तो कमाल का सोच है! अब मुझे पता है कि मैं क्या करूँगा!"
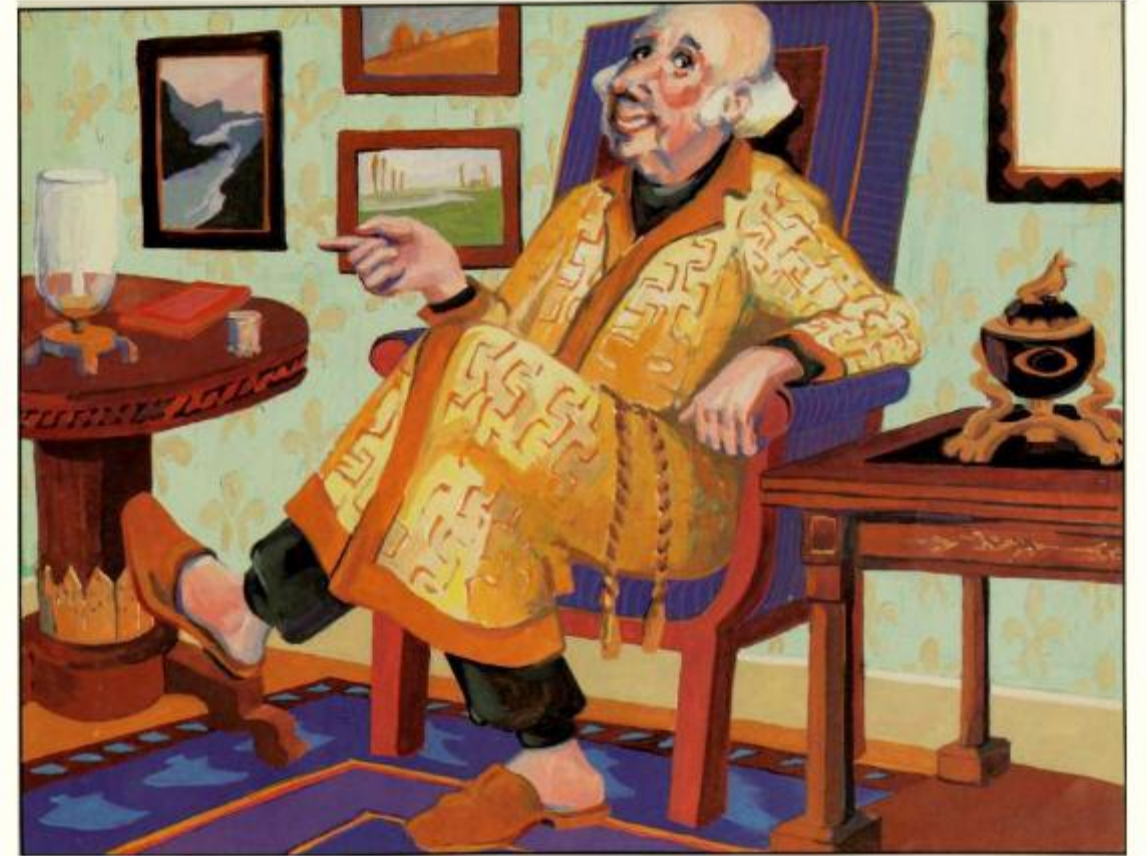
कुछ मिनट बाद, अमीर आदमी मोची के गरीब घर में गया.

"मै आप के लिये क्या कर सकता हूँ?" मोची ने पूछा. मोची अपने पड़ोसी को तुरंत पहचान गया लेकिन सोचने लगा कि वो रईस आदमी उसकी छोटी सी दुकान में क्यों आया था.

"मैं आपके लिए एक उपहार लाया हूं," अमीर आदमी ने कहा और उसने गरीब आदमी को एक बटुआ दिया.

मोची ने जब उसे खोला तो उसने देखा कि बटुआ चमकते, सोने के टुकड़ों से भरा था.

"मैं यह सोना नहीं ले सकता!" वह रोया. "मैंने इसे नहीं कमाया है. आप इसे वापस ले जाएं."

"नहीं," अमीर आदमी ने जवाब दिया, "आपने इसे अपने गीतों से कमाया किया है. मैं इसे आपको इसलिए दे रहा हूं क्योंकि आप दुनिया के सबसे खुशहाल आदमी हैं."
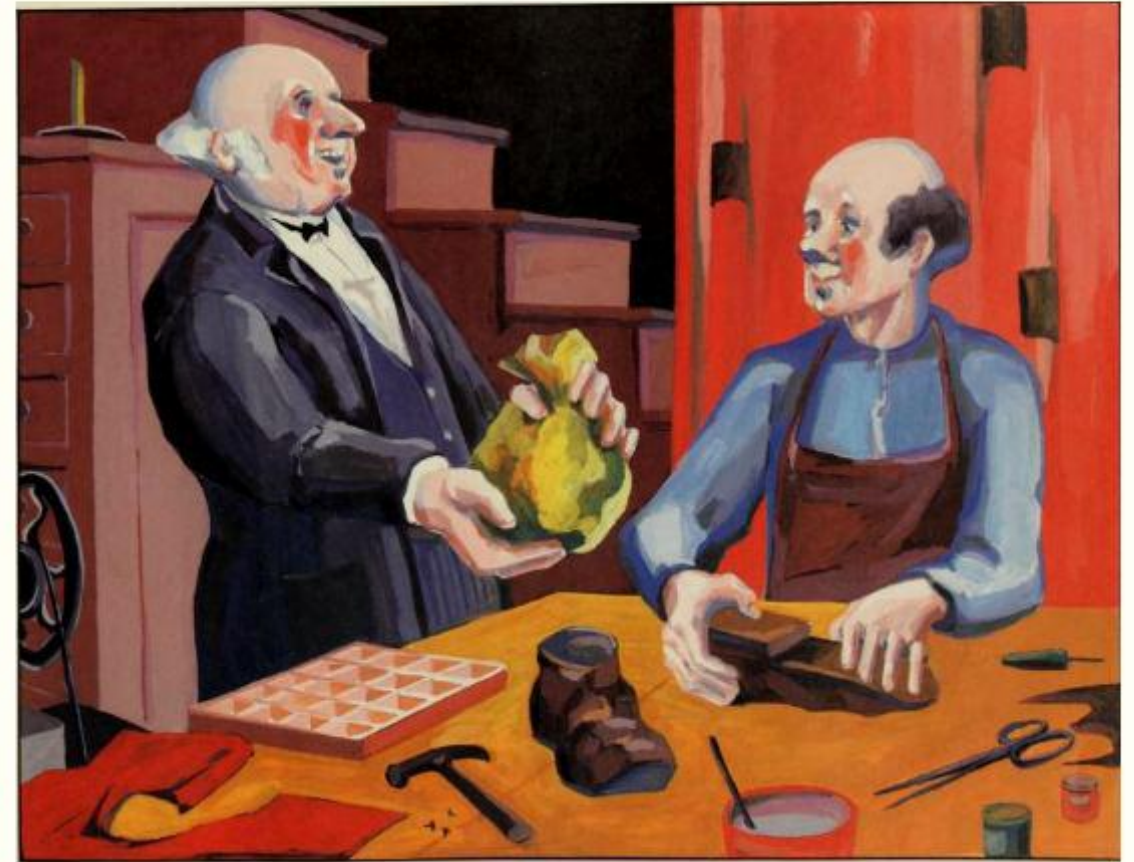
फिर धन्यवाद की प्रतीक्षा किए बिना, अमीर आदमी दुकान से चला गया.

मोची ने सोने के टुकड़ों को अपनी मेज पर रखा और उन्हें गिनना शुरू किया. बावन सिक्के गिनने के बाद उसे खिड़की से एक आदमी गुजरते हुए दिखाई दिया. उसने तुरंत सोना छिपा दिया. फिर वो सिक्कों को गिनने के लिए अपने बेडरूम में गया जहाँ उसे कोई देख नहीं सकता था.

उसने सिक्कों का बिस्तर पर एक ढेर लगाया. वे कितने सुनहरे और सुन्दर थे! वे कितने चमकीले थे! उसने इतने पैसे पहले कभी नहीं देखे थे. अब उसे अपना कमरा भी कुछ-कुछ सुनहरा और उज्ज्वल लग रहा था. फिर उसने सिक्कों को धीरे-धीरे बड़ी सावधानी से गिना.

"सोने के एक सौ सिक्के! मैं कितना अमीर हूँ! सुरक्षित रखने के लिए मैं इन्हें कहाँ छिपाऊँ?"

सबसे पहले उसने सिक्कों को बिस्तर में पैर के पास गद्दे के नीचे छिपाया. उस स्थान को वो अपनी वर्कशॉप से देख सकता था.

"पर सिक्के गद्दे के नीचे भी एक छोटी पहाड़ी बना रहे थे," उसने कहा. "शायद कोई ज़रूर इसे देख लेगा और चोरी कर लेगा. मुझे सिक्कों को तकिए के नीचे छिपा देना चाहिए."

जब वो सिक्कों को तकिये के नीचे रख रहा था, तभी उसकी पत्नी कमरे में आईं.

"क्या बिस्तर के साथ कोई परेशानी है?" पत्नी ने पूछा. मोची ने पत्नी को तिरछी नज़रों से देखा, और गुस्से में आकर उसे कमरे से बाहर निकाल दिया. उसने जीवन में पहली बार अपने पत्नी से कठोर शब्द कहे थे.

दोपहर के खाने का समय आया, लेकिन वो एक कौर भी नहीं खा सका. उसे डर था कि कि खाते समय कोई उसका खजाना न चुरा ले! काम करते समय अब उसने कोई गाना भी नहीं गाया. रात के भोजन तक उसकी हालत काफी खराब हो गई थी. उसने अपनी पत्नी से ठीक से बात तक नहीं की.

इस तरह दिन-रात पैसों के बारे में चिंता करते-करते मोची बहुत परेशान हुआ. उसे नींद ही नहीं आती थी क्योंकि उसे डर लगा रहता था कि कोई नींद में उसका सोना न चुरा ले. वो पलंग पर लेटे हुए छटपटाता रहता था और अपने तकिए पर हाथ फेरता रहता था.

लेकिन ऊपर, अमीर आदमी अब खुश था. "देखो, क्या बढ़िया आईडिया था," उन्होंने खुद से कहा. "अब मैं पूरे दिन मोची का गाना सुने बिना, आराम से सो सकता हूं."
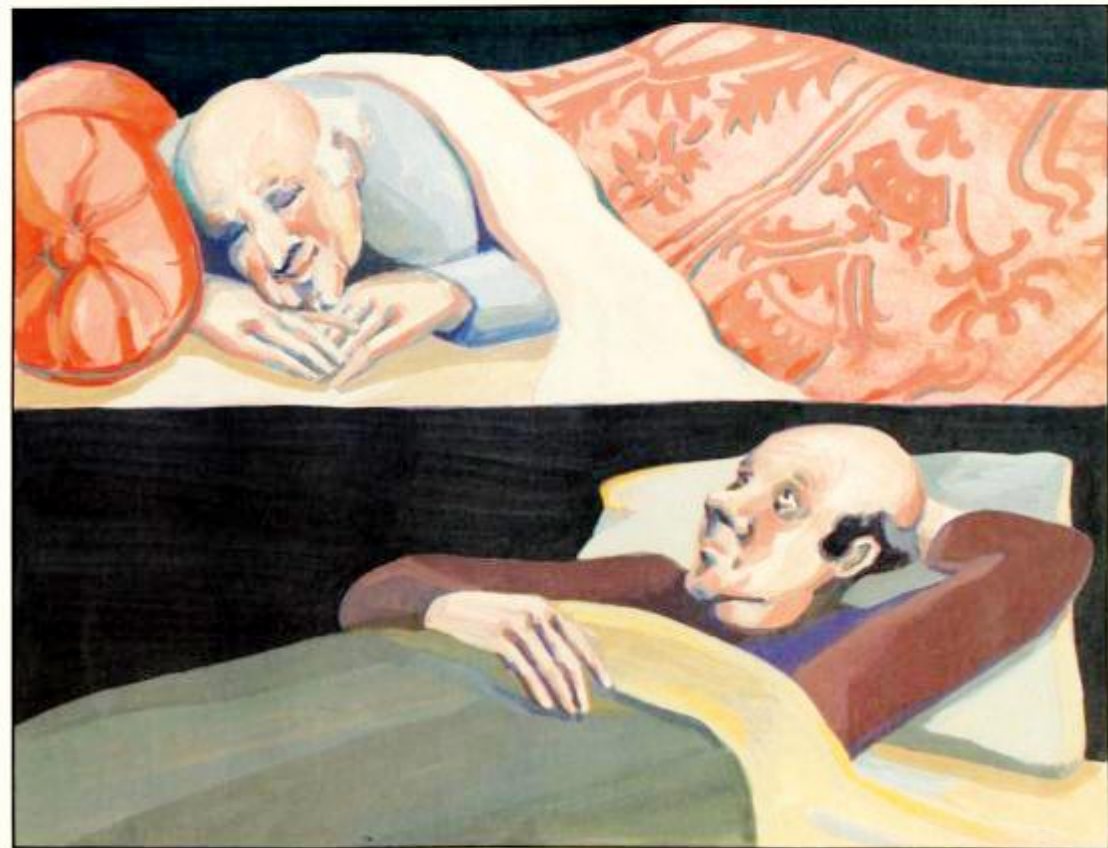
एक महीने तक मोची सोने के सौ टुकड़ों बारे में लगातार चिंता करता रहा. उसका वज़न घटने लगा और उसका चेहरा पीला पड़ गया. उसे देखकर उसकी पत्नी और बच्चे बेहद दुखी हुए. अंत में वो चिंता को सहन नहीं कर पाया. फिर एक दिन उसने अपनी पत्नी को बुलाया और उसे पूरी कहानी बताई.

"प्रिय पति," पत्नी ने कहा, "सोना वापस कर दो. मेरे लिए दुनिया में आपकी खुशी और आपके गीत किसी भी सोने-चांदी से ज़्यादा कीमती हैं."

मोची को यह सुनकर एकदम राहत महसूस हुई. वह बटुआ उठाकर सीधा अमीर आदमी के घर की ओर भागा. मेज पर सोने के सिक्के फेंकते हुए वो मुस्कुराया और उसने कहा: "यह रहा तुम्हारा सोना, इसे वापस ले लो! मैं तुम्हारे सोने के बिना ज़िंदा रह सकता हूं, लेकिन मैं अपने गीतों के बिना जीवित नहीं रह सकता हूँ."

समाप्त